रामपन

RAMNESS

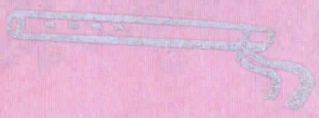

पार्ट–5

प्रस्तुतकर्ता :–

रामराज्य आह्वाहन मिशन

Website : www.ramrajyaahwahan.com
E-mail : ram@ramrajyaahwahan.com

प्रमुख कार्यालय :
ए 1, बी 2, पुष्पा अपार्टमेन्ट–III, 44ए, राजेन्द्र नगर,
सैक्टर 5, साहिबाबाद जिला गाजियाबाद (यू०पी०)
फोन नं० 0120–6516399, 09313055063

! ठहरो !

धरती पर, दोबारा से **रामराज्य** जैसी
खुशियां लाने मे हमारा सहयोग करे।

रामराज्य आह्वाहन मिशन

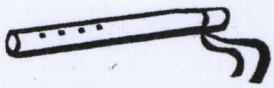

वैबसाईट देखें :
www.ramrajyaahwahan.com

नोट : आप भी राम हो सकते हैं, आप कहीं न कहीं के राजा हैं, आप किसी न किसी बात के धनी हैं, आप अपने परिवार या अपने व्यापार के राजा ही तो हैं, भगवान ने हर एक को बनाया हैं। अपना राज्य तथा अपना धन पहचानें और अपने राज्य को रामराज्य जैसा बनाकर, इस दुनिया में रामराज्य लाने में हमारा सहयोग करें।

मिशन को जानने के लिए सम्पर्क करें।

A1&B2, पुष्पा अपार्टमैंट–III, 44A, राजेन्द्र नगर,
सैक्टर 5, साहिबाबाद, जिला गाजियाबाद
फोन नं0 : 0120–6516399, 9313055063
E-mail : ram@ramrajyaahwahan.com

"मिशन सोचता है कि परिवार एक राज्य ही तो है, व्यापार एक राज्य ही तो है इसका मुखिया एक राजा ही तो है। हर राजा अपने राज्य को ऐसे क्यों नहीं चलाता जैसे राम जी अपना राज्य चलाया करते थे जब आप ऐसा चाहने लगेंगे, तो आप राम जी की तरह राज्य करना सीख भी जाऐंगे ही एवं जब आप राम जी की तरह राज्य करना सीख जाऐंगे तो रामराज्य ही करेंगे और क्या करेंगे। आपको भी आनन्द आ जाएगा आपके परिवार को भी आनन्द आ जाएगा और फिर धीरे धीरे रामराज्य ही होगा आप शुरु करें तथा अपने राज्य में रामराज्य बनाऐं।"

अपने मन को समझाना तथा अपने मन की जरुरतों को मन की इच्छाओं को सुलभ तथा आसान बनाना सीखें अगर आपके मन की इच्छाऐ सुलभ तथा आसान होंगी तो दूसरे उनको आप को उपलब्ध कराकर दुख का अनुभव नहीं करेगे बल्कि खुश होंगे।

बस यही है प्रेम का स्रोत अगर लोग आपकी मन पसन्द काम करेंगे तो आपको लोगों से प्रेम हो जाएगा, तथा अगर आप लोगों का मन पसन्द काम करेंगे तो लोगों को आपसे प्रेम हो जाएगा। और आप लोग एक दूसरे के मन का पसन्दीदा काम तब कर पाऐंगे जब एक दूसरे के मन को समझ पाऐंगे तथा मन पसन्द काम करना आसान होगा। इसके लिए जरुरी होगा एक दूसरे के मन को समझना कि सब अपने–अपने मन की चाह सुलभ तथा आसान रखें ताकि उसको खुशी खुशी तथा आसानी से पूरा किया जा सके तथा मनों को आनन्दित किया जा सके।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

सहनशीलता : यह है कि अगर आपके मन पसन्द नही हो रहा तो आप अपने मन को समझा सकें। अपने मन को समझाने की कला आना।

क्षमाशीलता : यह यही है कि अगर आपने किसी का मन पसन्द कार्य नहीं किया और उसने आपको कुछ बुरा भला कह दिया तो उसका बुरा न मानें बल्कि उसको उसके लिए क्षमा कर दें तथा फिर आगे के कार्यो को करने में लग जाऐं।

अर्थात जो बीत गया चाहे अच्छा या बुरा, उसे उलझाऐं नहीं अगर हम अतीत की वजह से आज को उलझाऐंगे तो हमारा कल का समय उसे सुलझाने में खराब, व्यर्थ, खर्च करना पड़ेगा इसकी काफी संभावना है। अपना आगे का समय बचायें यह भी तो बचत है।

समय ही धन है समय का सदुपयोग हो, समय की बचत हो व्यर्थ की उलझनें न हो यही तो हमें सफलता की तरफ ले जाऐगा।

इन सब बातों को हम समझें अपनी कमियां पहचानें और धीरे–धीरे उनमें सुधार लाते रहें जैसे–जैसे इसमें सुधार आता रहेगा, आपका जीवन आनन्द की तरफ बढ़ता चला जाऐगा। आप गौरवशाली होते चले जाऐंगे। यह निश्चित है निश्चित।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

आपका व्यवहार : बडा आसान एवं अच्छा तरीका है अपने जीवन को सराहनीय सुन्दर बनाने का। आप का व्यवहार बस एक रास्ता है। आप जब जिस स्थिति में व्यवहार कर रहे हैं। अगर आप बहु हैं तो यथासम्भव ज्यादा से ज्यादा अच्छा व्यवहार बिना सामने वाले के व्यवहार की, उसके स्वभाव की परवाह किये किसे एक अच्छी बहु कहा जाता है ऐसे व्यवहार का ज्यादा से ज्यादा प्रयास करें जितना भी आप से ज्यादा से ज्यादा हो जाए। अगर मां हैं तो जैसा एक अच्छी मां का व्यवहार होता है, अगर पड़ोसी हैं तो अच्छा पड़ोसी

जिसे सब अच्छा कहते हैं, जैसे अगर एक पत्नी हैं तो जैसा व्यवहार एक अच्छी पत्नी करती है, अगर एक बेटी हैं तो जैसा व्यवहार एक अच्छी बेटी करती है, अगर एक बहन हैं तो जैसा एक अच्छी बहन का व्यवहार होता है, जब एक कर्मचारी हैं तो जैसा व्यवहार एक अच्छे कर्मचारी का होता है, अगर आप मालिक हैं तो जैसा एक अच्छे मालिक का होता है बस यथा सम्भव ज्यादा से ज्यादा संभव। बस इस ही तरह ध ीरे–धीरे आप राम हो जाऐगें। तथा समाज के लिए और संतों के लिए एक आदर्श बन जाऐंगे। एक अच्छा आदर्श बनें और इसका आनन्द देखे कैसे सच्चा आनन्द आता चला जाएगा।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

तारीफ, बड़ाई, प्रशंसा : हम जब कोई बड़ाई का काम करते हैं तो हम परेशान रहते हैं कि किसे सुनाऐं और जिसे भी सुना सकने की स्थिति महसूस करते हैं अर्थात यह समझते हैं कि यह हमें अपना समझता है तो अपनी बड़ाई या अच्छा काम जो हमने किया सुनाने लग जाते हैं तथा बड़ी आत्मसन्तुष्टि का अनुभव करते हैं। अब कभी–कभी होता है कि सुनने वाला खुशी दिखाता है मगर कभी कभी इस पर ध्यान ही नहीं देता था अपनी या अपनों के द्वारा किये गये अच्छे कार्यों को सुनाने लग जाता है और हम शर्मिन्दगी सी महसूस करने लगते हैं कि इसे हमने क्यों सुनाया इसे तो कुछ खास ही नहीं लगा, इसने तो हमें एकदम जता दिया

कि ऐसा तुम ही क्या करते हो बल्कि ऐसा तो और लोग भी करते हैं।

बस यही है फर्क यही है रहस्य बड़ाई का। हकीकत यह है कि कुदरत ने इन्सान को ऐसा बनाया है कि सभी लोगों में हमेशा बड़ाई या अच्छाई का कम्पटीशन चलता रहता है हर व्यक्ति यही सोचता है कि शायद मैं ही अच्छा कर रहा हूं एवं वह यही सुनना चाहता है कि वाह भाई उसने तो बहुत अच्छा किया। लेकिन वह यह सुनकर बेचैन हो जाता है कि कोई और भी है जो उससे भी अच्छा कर पाता है। कभी निराश न हों आप तो अच्छी अच्छी बातें बस सुनते सुनाते रहें इसी से जीवन में अच्छापन, खुशियां, प्रशंसा, आनन्द आ जाता है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

एक बार एक भक्त ने पूछा कि आजकल आप राम बनकर कहा जी सकते हैं चारों तरफ तो रावण भरे पड़े हैं क्या आप समझा सकते हैं? मैनें कहा क्यों नहीं अरे भाई अगर आप को लगता है कि रावणों को देखकर राम को भी अपना रास्ता बदलना पड़ेगा तो इसका सीधा सा मतलब है कि आपने राम के चरित्र को समझा ही नहीं कहीं न कहीं समझने में आपसे कुछ कमी रह गयी है आपने कुछ समझने से छोड दिया है। अरे भाई राम के आने पर रास्ता रावण बदलते हैं राम नहीं। राम उनसे भी रास्ता बदलने के लिए नहीं कहते। राम के

रास्ते में तो कोई समस्या ऐसी है ही नहीं जिसका हल न हो। कोई समस्या ऐसी है ही नहीं कोई रावण ऐसा है ही नहीं जो राम के तरीके से हल न हो सके। राम कभी नहीं देखते समस्या कैसे पैदा हुई किसने पैदा की राम ने या रावण ने। वे तो हर समस्या को वैसे ही हल करने लग जाते हैं जैसे वह हल हो सकती है अब समस्या तो वैसे ही हल होगी जैसे वह हल हो सकती है। बस वे तो नुकसान को न्यूनतम करते हैं तथा समाधान से फायदे को उच्चतम। बस फर्क इतना है कि वे नुकसान या फायदा बस सिर्फ अपना ही नहीं देखते हैं बस सभी का हित देखते हैं। अपने से छोटों का तो सबसे ज्यादा बस यही उनका रामपन है। क्योंकि वे दीनदुखियों के सबसे ज्यादा अपने हैं जो जितना बड़ा दीन दुखी उसके उतने ज्यादा अपने। अपने छोटे तो और भी ज्यादा दीन दुखी हैं बस यही हैं राम। अरे आप इस तरह करके तो देखो अगर धीमे धीमे रावण आपका रास्ता छोड़ते न चले जाऐं तो कहना धीरे धीरे रावण भी आपके साथ न चलने लग जाऐ तो कहना।

राम को पहचानों उनको सही मायने में जानो। जब आप अपने में राम को लाने लगोगे राम को अपनाने लगोगे तो आप राम को सही मायने में जानने लगोगे और आप को कभी उल्टा वापिस चलने की जरुरत ही नहीं होगी।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

एक बार एक भक्त ने कहा कि यह जो दुनिया भगवान की है इसमें भगवान ने अलग अलग स्वभाव के लोग बनाऐ हैं कोई गुस्सैल है, कोई सीधा है, कोई आलसी है, कोई कर्मठ है आदि अब लोग तो भगवान ने जैसे बनाये हैं वे वैसे ही रहते हैं उनका स्वभाव नहीं बदला जा सकता है। लोगों को राम बनाना असम्भव है राम तो भगवान थे उनका राम जैसा स्वभाव था औरों का ऐसा नहीं बनाया जा सकता ।

मगर समझो यहां पर मैं कहता हूँ मेरा मानना है कि सभी जानते हैं और अक्सर कहा जाता है कि रामराज्य में तो सभी राम थे अर्थात राम जी ने ऐसे संभाला कि अपनी प्रजा में हर किसी को ही राम बना दिया। हर किसी की ही सूझ बूझ राम जैसी हो गयी थी सभी राम जैसे सच्चे हो गये थे अर्थात अगर राम जैसा प्रशिक्षक आज भी आ जाऐ तो आज भी सब राम जैसे हो जाऐंगे क्योंकि लोग तो उस समय भी प्रजा में विभिन्न विभिन्न स्वभाव के ही थे और वे सभी स्वाभाव वाले लोग राम की तरह राम जैसे सच्चे इन्सान की तरह जी रहे थे और खुश थे। अतः इसकी चिन्ता न करें बस राम की तरह ही जीना शुरु करें।

हे प्रभु मेरे शरीर तथा मन को आप अपने जैसा शरीर तथा मन जैसा प्रवित्र शुद्ध एवं स्वस्थ बनाऐं।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

आपके घर तथा आफिस में भी रामराज्य जैसे सुखों भरा तथा रामराज्य जैसी खुशियों भरा माहौल हो सकता है।

अपना राज्य रामराज्य जैसा बनाने के लिए निम्नलिखित प्रयास करें:–

1. सत्य को समझें, पहचानें, जानें फिर सच्चा सच जानें और सच में जीने की कला का अभ्यास करें उसे समझें सच क्या है।
2. जैसा बोओगे वैसा काटोगे जो दोगे वही पाओगे कहावत को आत्मसात करें।
3. राम की संगत करें जिससे आपका विवेक राम के जैसा विवेक हो जाए। रामायण राम की संगत का साधन है या सन्त जिनमें रामपन है। रामराज्य आहवाहन मिशन् की संगत करें।
4. राम को समझें पहचाने तथा उनके रामपन की बारिकियों में जाऐं जो आप राम जी की कष्पा से जान जाऐंगे जब राम का संग करेंगे ।
5. आप अहिंसा के साथ साथ मानसिक अहिंसा भी सीखें किसी के मन को न कुचलें, अपने मन को खुश करें, जब आपका मन राममय हो जाऐगा तो आपका मन औरों के मनों से मिलने लगेगा। क्योंकि सभी के मन में राम बसते हैं।
6. जब आप मालिक है तो अपने कर्मचारियों को राम जैसा बनाने का प्रयास करें उन्हे रामपन सिखाऐं

उन्हें रामपन दिखाएं क्योंकि आपके कर्मचारी आपकी परिवार आपकी प्रजा अगर राम जैसी हो जाऐगी तो इस ही बात में आपका भी, आपके कर्मचारियों का भी, आपके परिवार का भी तथा आपकी प्रजा का भला है। यही एक सिर्फ रास्ता है जिसमें दोनों का भला है आप अपना प्रयास करते रहें कभी न छोड़ें।

दूसरी तरफ जब आप कर्मचारी हैं, जब आप प्रजा हैं या परिवार के सदस्य हैं तो आप अपने मालिक को अपने राजा को राम बनाने की इच्छा मन में रखें। मन से भगवान से प्रार्थना करें कि हे प्रभु इन्हें राम जैसा कर दो तथा उन्हें राम जैसा ही मानो तथा रामपन फैलाओ ताकि उनका भी मन राम बनने का करने लगे अगर आपके मालिक आपके राजा राम हो गये तो आपका एवं आपके राजा दोनों का ही भला हो जाएगा। सांरा राज्य, सारा परिवार, आप हमेशा ऐसी भावना तथा ऐसी कामना बनाऐ रखें इस ही में दोनों का भला है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

मेरे दोस्तों कर्म ही पूजा है। आप जो काम करते हैं आप जो रोजगार करते हैं वह पूजा ही तो है क्योंकि कि जब आप काम करते है तो उससे कितने लोगों के मन खुश होते हैं आप कितनों को खुशियां देते हैं आप कमाकर अपने बच्चों को, अपनी पत्नी को, अपने को

नयी नयी चीजे, नये नये आनन्द, नये नये मनोंरजन, नयी नयी दावते देते हैं यह सब भगवान ही तो आनन्दित होते हैं। आप जिनसे कमाते हैं उनके दुख दूर होते हैं क्योंकि आपका जो भी रोजगार है वह दूसरे की परेशानी दूर करने का ही तो है आप प्लम्बर हैं तो दूसरे की पानी की समस्या दूर करते हैं, इलैक्ट्रिशियन हैं तो बिजली समस्या दूर करते हैं डाक्टर हैं तो शारीरिक दूख दूर करते हैं तो यह पूजा नही हैं क्या? अतः मेरे दोस्तों आपका कर्म आपका रोजगार भगवान की पूजा ही है। अब आप अपनी पूजा को और भी जितना ज्यादा प्यार से जितना ज्यादा मन से जितना ज्यादा सुन्दरता से करेंगे भगवान भी उतने ही और ज्यादा खुश होंगे मेरे दोस्तों भगवान की पूजा को पहचानो तथा भगवान के सच्चे भक्त बनो दिखाने वाले नहीं।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

जब हमारे घरों में बुजुर्गों का स्वर्गवास होता है तो बड़ी दुख की बात होती है एक स्तम्भ जो परिवार को बनाने में एक स्तम्भ की तरह रहा उखड़ गया तो दुख तो होगा ही और होना भी चाहिए। मगर एक और नजरिया है पुराना जाता रहे तथा नया आता रहे यह भी तो आवश्यक है। यह काम भगवान का है जब भगवान अपने संसारो से अपनी दुनिया से पुरानों को हटाते हैं पुराना पन खत्म कर रहे होते हैं क्योंकि आनन्द तो

हमेशा ही नयेपन से है। आप उनकी खामियों का खामियाना भुगतते रहते हैं तथा नयी चीजों का जिनका सुख आप ले सकते हैं नहीं लेते हैं तथा जब मन पक्का करके आप पुरानी चीजों को हटा देते हैं नयी लगा देते हैं तो घर में नयापन आ जाता है। यही भगवान की प्रक्रिया है तो जब भी भगवान आपके घर में ऐसा करे तो उन्हे करने दें इसके लिए जरुरत से ज्यादा शोक न करें भगवान को दुःख होगा।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

हमें तो सभी का भला ज्यादा से ज्यादा भला सोचना ही होता है हमें ऐसा न करने से भी क्या मिल जाएगा। हम अपनी या अपनों की गलती की वजह से क्या अपने एवं अपनों के जीवन में जहर घोल देंगे क्या। अगर हमारे अपने अज्ञानतावश अपना भला नहीं सोच पा रहे हैं तो क्या हमारा फर्ज है कि हम भी उनके जीवन में जहर घोल दें नहीं हमें तो सभी के जीवन में ज्यादा से ज्यादा अमृत्व ही घोलना होता है। अब अगर हम से अमृत्व घुल ही नहीं पा रहा है या अगर हम अमृत्व घोल पाने में असमर्थ हो रहे हैं तो अलग है बात मगर घोलना हमें सिर्फ और सिर्फ अमृत्व ही होता है विष कभी भी नहीं किसी भी सूरत में नहीं। जो राम हो जाता है उसका कौन अपना नहीं है इसे सारे ही अपने, अपने भाई से, अपने मां बाप से तथा अपने रिश्तेदार से लगते हैं यही है रामपन।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

जब मैं लोगो को रामपन सुनाता हुं तो अक्सर श्रोता कहता है श्रीमान यह तो मेरे विरोधी पक्षों को सुनाओ। मैं परेशान हो जाता हूँ क्योंकि यही तो बात है जो रामराज्य को रोकती है, जो रामराज्य के रास्ते में अवरोध पैदा करती है। मैनें विचार किया कि ऐसा क्यों है तो पाया कि यह होता है इस वजह से क्योंकि आज के समय में हर व्यक्ति सिर्फ निजी स्वार्थ तक ही सीमित रह गया है वह इसके आगे देख ही नहीं पाता है बस वह इतना ही समझ पाता है कि जो उसके निजी स्वार्थ की पूर्ति कर दे वह राम है तथा जो उसके निजी स्वार्थ की पूर्ति न करे वह रावण है या राम नहीं है। यह सवाल खत्म हो जाता है जब इन्सान निजी स्वार्थ या निजी हित से ऊपर उठ जाता है अर्थात जब वह सभी के हितों को इस ही नजर से देखने लगता है जैसे वह अपने निजी हित को देखता है। ऐसे देखना बडा ही आसान है बस समझ में आने की बात है। इसका तरीका है कि इन्सान कर्म तो अपना निजी हित करने के लिए जो सर्वात्तम सम्भव है करता रहे, मगर स्वाभाविक है दूसरे भी तो अपना काम करेंगे ही अर्थात अपने निजी हित के लिए काम। हम ऐसा न करें कि अपना तो निजी हित देखें तथा उम्मीद करें कि दूसरे अपना निजी हित न देखें। बस यही है समभाव जब यह समभाव इन्सान में आ जाएगा उपर वाला निजी भाव खत्म हो जाएगा तो स्वयं रामराज्य बन जाने लग जाएगा।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

आज मैं बहुत परेशान रहा यह सोचकर कि राम जी को, कृष्ण जी को तो सभी लोग प्यार करते थे तथा आज तक करते हैं मुझको कोई नहीं करता, करता भी है तो थोड़े समय करता है फिर सोचता है कि इसे प्यार करने का कोई फायदा नहीं है क्या करना है इसे प्यार करके तथा फिर मुझे मेरे हाल पर छोड़ देता है और फिर मैं अकेला सा रह जाता हूँ। जब मैंने इस पर विचार किया तो पाया राम जी व कृष्ण जी का स्वभाव बहुत ही ध्यान रखने वाला स्वभाव था वे हर चीज का बहुत ख्याल रखते हैं अपने लोगों का, अपनी चीजों का, अपनी प्रजा का, अपने सेवकों का, कुदरत की चीजों का, जीव जन्तुओं का आदि यही वजह थी कि सब उन्हें प्यार करते थे। निचोड़ यह है कि जिनकी तुम परवाह करते हो वह तुम्हें धीरे धीरे प्यार करने लग जाते हैं अगर आपको प्यार पाना है तो तुम्हें उनका ध्यान रखना चाहिए प्यार पाने के लिए आपको प्यार करना नहीं ध्यान रखना होता है यही सत्य है तथा शायद प्यार का यही नियम है और शायद ही नहीं यही सत्य है। आप अपना ध्यान रखने वाला स्वभाव बना लें रोज किसी एक को खुश करें, फिर दो को करें, फिर तीन को करें ऐसे ही आपको यह भी आ जाएगा तथा आपका जीवन खुशियों से भर जाएगा। बहुत महत्वपूर्ण शब्द है यह 'परवाह करना'।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

जीवन का सच्चा सुख तभी है जब आप अपने मतलब से मतलब रखते हैं दूसरे के जीवन में ताक झांक या

दखलंदाजी उतनी ही करते हैं जितनी दूसरा चाहता है या जितनी दूसरा सहन कर सकता है अगर आप इससे ज्यादा करोगे तो आपके जीवन में दुख आना निश्चित हैं और अगर निश्चित भी नहीं तो उम्मीद तो पूरी है अब आप खुद ही देख लो कि आपको दुखों से बचना है या नहीं। यहीं पर अब अगर आप भगवान को देखो जो सबसे ज्यादा सुखी तथा सबसे ज्यादा खुश हैं इस ही लिए तो हैं वे सबको अच्छी बातें अच्छी राह बताते तो हैं मगर मतलब सब से सिर्फ मतलब भर का रखते हैं सब कुछ सिखाते रहते हैं पर जो जो भी कर रहा है वे जरुरत से ज्यादा दखलंदाजी नहीं करते कह देते हैं जैसा करेगा वैसा खुद भुगतेगा यह उसकी मर्जी। तभी तो भगवान शान्त, सुखी एवं खुश रह पाते हैं अन्यथा उनका तो जीना हराम हो जाए लोग तो भगवान को शान्ति से बैठने न दें। अतः हमेशा उतना जवाब दो जितना पूछा जाए, उतना देखो जितना दूसरा दिखाना चाहे, उतना समझाओ जितना दूसरा समझना चाहे तथा अपने जीवन में मस्त रहो। अपने को भगवान जैसा बनाओ आप राम ही बन जाओगे।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

कैसे मुझे भगवान ने एक उदासीन इन्सान से प्रेमभरा इन्सान बनाया देखें भगवान की कैसी लम्बी बांहे है।

मैं शुरु से ही ऊँचे–ऊँचे आदर्शों को लेकर चलता था मन को मारता था, तथा मन की कुछ बातें कभी चोरी

चोरी करता था मगर वह भी न के बराबर ही कर पाता था क्योंकि हमेशा ही भगवान का डर, मेरी वजह से औरो की बेइज्जती का डर बना रहता था जिसमे मैं मन को मारता रहता था, मेरी यह भी समझ में नहीं आ पाता था कि खुश कैसे हुआ जा सकता है, यानि खुश रहने का तरीका भी नहीं पता था तथा दुखी व उदासीन मन से ऊंचे–ऊंचे आदर्शों को साथ रखते हुए उदासीन भाव से जीवन में आगे बढ़ता रहता था, जब किसी को खुश देखता तो सोचता कि मैं अपने को भी खुश करूं मगर मुझे रास्ता समझ नहीं आता था फिर भी मैं क्या कर सकता था जीता रहता था। प्यारी प्यारी सी लड़कियों को, स्त्रियों को, प्यारे से आदमीयों को देखता मन करता ये मुझसे भी बातें करें मैं भी खुश होऊं, मैं इनका सच्चा दोस्त बनुं मगर मुझ उदासीन स्वभाव वाले इन्सान से कौन दोस्ती करे, सब मेरा सम्मान तो करते मगर दोस्त कोई न बनता हर व्यक्ति मुझसे अच्छा अच्छा बोलता मेरी इज्जत करता मगर मेरा दोस्त मेरी खुशी के लिए बन जाता मगर सही मायने में मेरे लिए उनकी चाह बन जाऐ ऐसा न हो पाता। मैं सोचता मैं क्या कर सकता हूँ शायद मैंने पूर्व जन्म में कुछ ऐसे पाप किए हैं अतः मेरा यही प्रालब्ध है तथा निराश होकर अपने जीवन की गाड़ी को ढकेलता रहता था। मगर भगवान पर हमेशा मेरी पूरी आस्था रही है उनकी क्षमताओं पर मुझे कभी शक नहीं रहा इसे मैंने उनकी सिर्फ कोई मजबूरी माना।

धीरे–धीरे मैं भगवान की भक्ति मार्ग पर बढ़ चला। मैं सच में देखा जाए तो नारद जी का रूप हो गया वही सब कुछ, उदासीन भाव सिर्फ भक्ति दूसरों के दुख दूर करने की इच्छा मगर विरक्ति सब कुछ वैसा ही नारद जी जैसे दुख, अकेलापन, सम्मान, सब कुछ वैसा ही।

जब–सब कुछ नारद जी जैसा हो गया तो मेरी भगवान से एक शिकायत जगी कि भगवान तो सम्पूर्ण सांसारिक वैभव, स्त्री, सुख आदि सब कुछ के साथ जीते हैं बढ़िया तरीके से सब कुछ सम्भालते हैं, मगर भक्त को इस सबसे दूर रखते हैं तथा कहते हैं कि ये सब माया है, इसके पास जाओगे तो ये तुम्हें दुख देगी, अर्थात इससे विरक्त बनाते हैं। मेरे मन में भावना प्रबल होने लगी कि प्रभु आपका जो भक्त माया का सुख भी चाहता है तो जैसे आप इसे सुन्दर तरीके से सम्भालते हैं वह ज्ञान आप अपने भक्त को सिखा भी तो सकते हैं। कि जैसे आप माया के संग रहते हुए भी भगवानमय है तथा पापी नहीं बनते हैं वैसे ही आपका भक्त भी वैसे ही कि भगवानमय भी रहे तथा पापी न बने तथा माया का सुख भी भोगे। अगर ऐसा नहीं होगा तो भक्त आपके कहे मुताबिक चलते तो रहेंगे मगर मन मन में आपको चालाक कहेंगे जो कि भगवान के लिए एक अच्छी बात नहीं है। यह भावना प्रबल होने के लिए नारद जी का एक प्रसंग है जो कि रामायण में लिखा है।

नारद जी में काफी भक्ति के बाद एक रुपसी से विवाह की कामना जगी, उन्होंने भगवान से उनका रुप मांगा भगवान ने उन्हें बन्दर जिसका (पर्यायवाची 'हरि' भी है) का रुप दे दिया रुपसी ने उन्हें पसन्द नहीं किया वहां फिर भगवान खुद आए और रुपसी को ब्याह कर ले गये जब नारद जी को पता चला कि भगवान ने उन्हें छला है तो उन्होने भगवान को श्राप दे दिया कि उन्हे भी पुरुष रुप में जन्म लेना होगा तथा स्त्री वियोग सहना होगा तब राम जी का जन्म हुआ। यहां पर मेरी यही शिकायत रही कि ठीक है तब भगवान ने एक गलती की मगर ऐसा तो नहीं होना चाहिए था उस रुपसी से दूर रहना, रुपसी के साथ रहते हुए भी तो भगवानमय रहा जा सकता है यह कला भगवान को आती है यह कला भगवान अपने भक्त को सिखा भी तो सकते हैं। खैर भगवान ने मेरी यह शिकायत, मेरा यह सुझाव शायद सुन लिया शायद भगवान को लगा है कि हां भई ठीक बात है इस भक्त की, और उन्होंने इस रास्ते को अब आगे बढ़ाया है।

अब आगे चलते हैं, भगवान ने, एक मुझ नारद जी जैसे सच्चे भक्त, मगर एक उदासीन इन्सान, माया के साथ रहने की कामना भी ऐसे जैसे भगवान अपनी माया के साथ रहते हैं, की कैसे मदद की।

1. एक दिन मैं मेट्रो के वैलकम स्टेशन पर खडा सोच रहा था कि बस शायद मेरा तो जीवन ऐसे ही उदासीन भाव के साथ ही खत्म हो जाएगा। मैं

अपने परिवार से भी सिर्फ उदासीन ही रहा मेरा दुनिया में कोई दोस्त भी नहीं है जिससे ये सब अपने मन की बातें कर सकूं शायद भगवान के लिए भी मुझ जैसे इन्सान को खुश करने का, खुश रखने का कोई रास्ता नहीं है। अतः शायद जीवन यूं ही अधूरा एवं उदासीन चला जाएगा।

2. अचानक कुछ दिन बाद मैं ऑफिस से वापस आ रहा था पार्किंग से गाड़ी उठा रहा था मेरे मन में गाना बजने लगा, ओ मेरी जोहरा जबी तु अभी तक है हंसी और मैं जवां दिलों को जीतने का फन जो तुझमें है कहीं नहीं यह लाईन मेरे मन में उतर गयी मुझे लगने लगा स्त्रियों में यह कला होती है यही है जगह सीखने की यही पर भगवान ने मेरा रुख एक स्वप्न द्वारा श्री कृष्ण भगवान की तरफ भी मोड़ दिया, उनमें भी दिलों को जीतने का फन था मैंने भगवान श्री कृष्ण तथा औरतों, लड़कियों की जिन्दगियों में, उनकी बातों में झांकना शुरु कर दिया।

3. मैनें एक लड़की भगवान श्री कृष्ण जैसी ढूंढ निकाली या कहो भगवान ने मेरे लिए ढूंढ निकाली अर्थात मेरी झोली में डाली मैनें इस लड़की की तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाना शुरु किया मगर मैं अधेड़ उम्र का इन्सान तथा वह एक युवती तथा वह भी ऐसी युवती जिस पर जाने कितने युवक दोस्त हैं मगर वो तो सभी की दोस्त है चाहे हो युवतियां या

हो उनके पिताजी। खैर वह मुझसे घबराती कहती मैं आपकी दोस्त हूँ मगर मैं जानता था कि वह यह सब सिर्फ मेरी खुशी के लिए ही कहती है वह मेरी खुशी के लिए, कहने के लिए। मगर उसे मेरा क्या पता मैं कैसा हूं उसे मुझ जैसे मनचलों से बचना भी तो है मगर भगवान की बांहे बहुत लम्बी है भगवान मुझे हिम्मत देते रहे।

4. इन्ही दिनों गाना आया सिंह इज किंग दिल अगर सच्चा हो तो रब कर दे सब सैटिंग यह मन में उतर गया मेरा मन तो सच्चा था ही मैं उस पर ध्यान रखता रहा मन कही असच्चा न हो जाए, मुझे लगने लगा कि भगवान ने इस समय यह गाना बनाया ही मुझे रास्ता दिखाने के लिए। जब यह गाना पूर्ण रुप से समझ में आ गया तथा दिल में उतर गया भगवान ने एक दूसरा कदम बढाया एक और गाना उतारा।

5. मैं बहुत थका हुआ काम से मगर मन से निराश जा रहा था कि फोन लगाया गाना बजना शुरु गुजारिश एक दिन होगी खुशियों की बारिश मोती होगें तेरी राहों में आदि ऐसा लगा जैसे कि भगवान मेरे लिए गा रहे है और फिर मैनें इस गाने को ढूंढा तथा सुना लगा वास्तव में भगवान ही गा रहे हैं तथा कह रहे हैं कि तु तो एक सच्चे भक्त की तरह आगे बढ़ता चल चिन्ता न कर एक दिन ऐसा ही होगा।

मेरी पकड़ और मजबूत हुई मैं दिलों के जीतने के फन की तरफ और बढ़ा। मेरा काम है भगवान का काम करना, मगर अभी भी काम नहीं बन पा रहा, मगर मैं क्या कर सकता हूं मुझे तो चलते रहना है। फिर भगवान ने एक अगला गाना उतारा।

6. तुझमें रब दिखता है इसने सिखा दिया प्रेम, कि सही मायने में इन्सान को तो प्रेम सिर्फ रब से ही होता है आपको जहां जिसमें जिस वस्तु में या जिस भी चीज में भगवान अर्थात भगवान के गुण दिखाई देते हैं, आपको बस उस ही से सिर्फ उतने ही से प्रेम होता है अब मैं सबमें उस रब को ढूंढता मुझे हर एक में दिखाई देता किसी में कम किसी में ज्यादा मेरा भाव और भी अच्छा होने लगा प्यारा होने लगा मेरे दोस्त मेरे कृष्ण के प्रति, और सच्चा होने लगा मैं सिर्फ भगवान को देखता भगवान से मेरी कभी कोई शिकायत तो होती नहीं उनको मेरे लिए जो अच्छा लगेगा, वही तो वे करेंगे। मेरा भला मुझे तो नहीं पता है वे ही तो जानते है मेरा किस में भला है।

7. मै अपने कृष्ण से दोस्ती का प्रयास करता ही रहूं मगर डर लगे कि कही बदनाम न हो जाऊं मैं एक ऐसे रास्ते पर चल रहा हूं जहां पर मेरा नाम मेरी बदनामी सब भगवान की है, अगर मैं बदनाम हो गया तो बहुत बडी गड़बड़ हो जाएगी मेरे भगवान

का नाम बदनाम हो जाएगा, जो भगवान की सच्ची भक्ति का रास्ता दिखाने निकला है वह ध्वस्त हो जाएगा, मगर चलना भी होगा ही। मैं राम-राम करता रहता तथा चलता रहता। मेरे दोस्त ने मुझे बताया कि दोस्ती तो तब होगी जब दोस्ती को समय दोगे। मुझे मेरी कमी पकड़ आ गयी। मैं तो समय ही सिर्फ उच्च आदर्शों को देता था जिसको समय देता हूं वो मेरे पास हैं मैं दोस्ती को समय देने लगा मैं दोस्ती सीखने लगा।

8. भगवान की कृपा से मैं घर में दोस्ती बनाने लगा, अपने बच्चों का अपनी पत्नी का दोस्त बनने लगा हर समय दोस्ती सिखाने लगा दोस्ती सीखने लगा मैं तो बच्चे से भी सीखता हर समय दोस्ती की बातें सच्ची दोस्ती को सीखता, इस ही का प्रभाव मेरा भतीजा भी प्रभावित हुआ भगवान ने कृपा की उसने मुझे एक एस.एम.एस.भेज दिया।

   "Feeling of Luv+moments of caring+Choti Choti sharing+stupid fights+shoulders to cry+2b together in pain+creaks a miracle called friend"

इस एस.एम.एस. ने तो जिन्दगी में चमत्कार किया तथा मुझे दोस्ती करना तथा समझना सिखा दिया।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

जो इन्सान अपने मान की परवाह किये बिना दूसरों का तथा अपने भगवान का मान रखता है वही सच्चा राम

भक्त है। क्योंकि सच्चे रामभक्त की यह विशेषता है कि उसका अपना कोई मान नहीं होता तथा दूसरों का हर किसी का मान होता है, तथा दूसरों का हर किसी का मान मानता है क्योंकि उन सब में ही तो वह राम देखता है।

उसका अपना मान नहीं होता मतलब यह नहीं कि वह अपना अपमान कराता फिरता है बल्कि वह अपने से ज्यादा दूसरों व भगवान के मान की परवाह करता है अपना अपमान यथा सम्भव बचाता है क्योंकि जब उसका अपमान हो रहा होता है तो वह उसका नहीं राम जी का अपमान हो रहा होता है यही सत्य है।

ऐसा सच्चा रामभक्त समाज के लिए, पृथ्वी के लिए अपने लिए भगवान के लिए, तथा अपने परिवार सभी के लिए वरदान हो जाता है।

हां कई बार ऐसा जरुर होता है कि वह तो दूसरों को मान देता है मगर दूसरों को नहीं लगता। कभी वह अपना मान नहीं रखता तो दूसरे सोचते हैं कि वह डर गया। मगर इन सब परिस्थितियों की जिम्मेदारी वह अपने ऊपर नहीं रखता है तथा राम जी पर छोड़ देता है। अक्सर देखा गया है इन परिस्थितियों का ख्याल राम जी स्वयं खुद रखते हैं।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

मेरा मन बहुत दुखी है कारण मन की अतृप्ता। मेरा मन लड़कियों, लड़कियों जैसी औरतों में रहने का करता है पर अगर मैं उन्हें अच्छा नहीं लगता उन्हें मेरे साथ मजा नहीं आता तो वे क्या करें मैं परेशान रहता हूं कि मैं क्या करुं कि उन्हें मेरे साथ भी मजा आऐ, मगर कुछ नहीं होता।

मेरे पास बड़ा सीधा सा हल है कि मैं उनका मोह छोड़ दूं उनसे विरक्ति कर लूं मगर मेरा मन नहीं मानता वह कहता है क्यों विरक्ति ही क्यों। जाने जीवन में कितने लोग हैं जो खूब लड़कियों के साथ रहते हैं खुश करते हैं खुशी देते हैं तथा बुरे भी नहीं होते हैं फिर विरक्ति ही क्यों। उन जैसा क्यों नहीं होना चाहिए मैं कहता हूं यही सही है और मैं यही चाहता हूं मैं नहीं जानता यह कैसे होगा, मगर भगवान को यही करना होगा भगवान खुद भी तो गोपियों के साथ आनन्दित रहते हैं पत्नी के साथ भी पूर्ण मर्यादित, सम्मानीय तथा प्रेमपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं। यही ही होना चाहिए अगर हमने लड़कियों को देखकर आंखे बन्द करना शुरु कर दिया विरक्ति की तो यह तो असफलता है हम भगवान के अच्छे प्रतिनिधि कैसे हो सकते हैं। अब भगवान इस समस्या को देखें तथा हल करें।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

जब लड़की की शादी होती है बड़ी समस्या होती है क्योंकि नये ख्यालों की लड़की नये घर में पुराने लोगों

के बीच में आ जाती है अर्थात जो पुराने ही तरीकों से क्योंकि घर की मैनेजर (अर्थात् सास) घर को मैनेज कर रही होती है 25–30 साल पुराने रीति रिवाजों के अनुसार तो बड़ा भारी द्वन्द्व छिड़ जाता है। सास का ज्यादातर यही मानना होता है कि अब जब बहु आ जाएगी तो मेरे को एक बड़ा योग्य सा सहारा मिल जाएगा मैं उसे कह दिया करुंगी और वह और भी सुन्दर तरीके से कर दिया करेगी तथा सास का इधर उधर मान बढ़ायेगी।

जबकि लड़की घर में बहु वह बनकर आती है तो सोचती है कि अब तो मजा आएगा पहले तो मम्मी पापा उस पर सख्ती करते थे अब वह खुद मालिक होगी उसके पास एक पति भी होगा जो उसकी सपोर्ट होगा तथा वे सब खुशियां वे सब जो उसकी अतृप्त इच्छाऐं हैं उनको भी उपलब्ध कराऐगा।

अब जब दोनों पक्षों का मेल होता है तो द्वन्द्व शुरु हो जाता है यह द्वन्द्व होता दो उम्मीदों का जो एक दूसरे से भिन्न होती हैं तथा एक दूसरे को प्रभावित करती है।

यह जो द्वन्द्व होता है एक ऐसा है जहाँ एक मैनेजर जो 25–30 सालों से सब कुछ मैनेज कर रहा है तथा अपने मैनेजमैंट के तरीकों का अभ्यस्त एवं उससे सन्तुष्ट है तथा उसको आज के वर्तमान विकासों की नयी तकनीकियों की पूर्णतः कभी कभी जानकारी भी नहीं है

वह चाहते हैं तथा सोचते हैं कि बहु आ कर उनके प्रबन्ध कार्य में सहायक बनेगी न कि वह प्रबन्ध के तरीकों को बदलेगी। क्योंकि आजकल लड़कियाँ पढ़ी लिखी हैं, बाहर आती जाती हैं उनका अपना एक नजरिया एक दृष्टिकोण बना हुआ होता है, उनमें आत्मविश्वास होता है, वे बेहिचक सास से टकरा जाती हैं, चाहती हैं कि वे जब उनको ज्ञान है, जानकारी है, अनुभव है तो वे क्यों पुराने ही तरीके से चलें।

अब यह परिस्थिति होती है दो मैनेजरों के बीच की जहां एक पुराना मैनेजर नये आने वाले मैनेजर को अपने हिसाब से चलाना चाहता है जबकि नया आने वाला मैनेजर यह सोचते हुए कि कल तो सब कुछ मुझे ही चलाना है अपनी सुविधा का ध्यान रखते हुए अर्थात् अपने को ज्यादा परेशान होने से बचाते हुए आज के अनुसार आनन्द लेते हुए परिवार की व्यवस्था बनाना चाहता है।

अब यहां पर अगर देखा जाए तो दोनों ही पक्ष अपनी–अपनी जगह सही हैं दोनों की उम्मीदे, दोनों की समस्याऐं ही वाजिब हैं पुराना मैनेजर नये मैनेजर के आने पर एक दम व्यवस्थाऐं कैसे छोड़ दे कैसे बदल ले। जाने सही हैं या नहीं, नया मैनेजर जाने कुशल है या नहीं है और कुशल भी है तो अपनी मैनेजरी कैसे छोड़ दे वह नये मैनेजर को अपनी सहायता के लिए अपने सहायक के रुप में तो स्वीकार कर सकती है मगर अपनी जगह कैसे छोड़ दे।

अब नया मैनेजर यह चाहता भी नहीं है कि पुराना मैनेजर अपनी जगह छोड़ दे मगर चूंकि यह भी अब काबिल है होशियार है तो इसे अपना आत्म सम्मान चाहिए ही वह यही चाहता है कि उसे ऐसा न लगे कि बहु एक बिना बेतन वाली नौकरानी है क्योंकि आजकल की बहुऐं पढी लिखी हैं उनकी अपनी सोच है, वे आत्मनिर्भर है तथा अपना और औरों का अच्छा-बुरा अपनी नजर से देखना जानती हैं समय बदल गया है जबकि पहले ऐसा ही था लड़कियां पढ़ी लिखी नहीं थी उन्हे बाहर की दुनिया का तजुर्बा नहीं था, वो आत्मनिर्भर नहीं थी, वे मजबूर महसूस करती थीं। अतः अपने को इस स्थिति अर्थात बिना वेतन वाली नौकरानी के रुप में भी स्वीकार कर लेती थीं तथा निभा लेती थीं। सास जैसे जैसे पुरानी होती जाती थी वह सास की जगह धीरे धीरे लेती जाती थीं।

आज के समय में पढ़ी लिखी लड़कियां नौकरानी जैसे एहसास से ही सिहर उठती हैं क्योंकि न तो शरीरों में दम है, न दिमागों में दम है सभी अपने छोटे मोटे काम नौकरों से कराकर अपने पर बाजिब सा बोझ रखकर सुख चैन का जीवन व्यतीत करना चाहते हैं आज यह सब सुविधाए उपलब्ध भी हैं। अतः आज के समय में आवश्यकता है कि सभी तथ्यों, बातों को खुले दिमाग से देखने की। बहु का फर्ज है अपनी जानकारियों का अपने सुख चैन का, अपनों के सुख चैन का अर्थात

सास आदि का ध्यान रखे उसकी उचित व्यवस्थाऐं बनवाने में मदद करे तथा अगर अपने उन व्यवस्थाओं में बाधा बन रहे हैं तो धीरे धीरे सब करते हुए। उनका बुरा न माने यह न सोचे कि मै परायी हूं इस वजह से ऐसा किया जा रहा है बल्कि उन बाधाओं को नजरअंदाज करे तथा हमेशा अपना एवं औरों का सिर्फ भला ही सोचे गुस्से में कुछ न बिगाड़े, न अपना घर, न दूसरों का घर, धीर धीरे अपनी काबिलियत के अनुसार व्यवस्थाओं को अच्छा बनाने का प्रयास करती रहे दिखावा न करे। मैं ज्यादा से ज्यादा काम करके दिखाउं, नहीं यह सब उतने ही होने चाहिएं जितने हमेशा निभाए जा सकें अगर हम नहीं कर पा रहे तो दूसरा नाराज होगा ही उसको बर्दाश्त करना सीखें अपनी तरफ से ज्यादा से ज्यादा करने की कोशिश करें मगर न कर पाऐं तो उससे निराश न हों चिन्ता न करें आत्म सन्तोष करें। ज्यादा तारीफ न भी मिल पाएगी तो क्या थोड़ी से ही काम चला लें यह सोच, यही सोच आपके जीवन को धीरे धीरे सुलझा लेगी। बहुत ज्यादा तारीफ, बहुत ज्यादा प्रशंसा, बहुत ज्यादा दिखावे की कामना ही जीवन को नष्ट कर देती है। सच में हकीकत में जीना सीखें सच के परिणामों को बर्दाश्त करें धीरे धीरे सब आपके अनुकुल ही चलने लगेंगे। देखना ऐसे ही होगा यही सत्य है तथा बहु का जीवन स्वर्ग हो जाएगा। हमेशा उतना ही करने का

उतनी ही उम्मीद बंधाऐं जितनी आप हमेशा पूरी कर सकते हैं अन्यथा आपके जीवन में अशान्ति आएगी।

सास का फर्ज है सभी बातों का ध्यान रखते हुए नयी आने वाली बहु का, नये मिजाज का ध्यान रखते हुए जैसे पहले चल रहा था सब कुछ वैसे ही चलता रहने दे थोड़ा थोड़ा शेयर करना शुरु करें उसकी खुशी तथा अपने पर बोझ तथा परिवार पर पड़ने वाले बोझ को कम से कम करते हुए धीरे धीरे जैसे उसके पास एक और करने वाला आ गया है धीमे धीमे उसको अपना सहारा उसकी सुविधानुसार बनने दे। उसे तुम्हारी उसके हिसाब से मदद करने दें हो सकता है वह खुद उससे भी अच्छी मददगार या सहायक सिद्ध हो जितना सास उम्मीद करती थी तथा अगर कहीं कुछ कमी लगती है तो समझा दें मगर जबरदस्ती न करे। क्योंकि अगर जबरदस्ती की तो वह अपने परिवार को अलग करके भाग जाएगी या यह संभव नहीं हुआ तो सारे परिवार को छोड़कर भाग जाएगी। जिससे वह अपने लिए भी, अपनों के लिए भी, बेटे के लिए भी, परिवार के लिए भी तमाम दुख खड़े कर देगी जिनकी वजह से तुम भी पछताते रहोगे सुधारना बड़ा कठिन हो जाएगा। दूसरी तरफ अगर उपर लिखित तरीके से किया जाएगा तो धीरे धीरे वह हिस्सा बन जाएगी और हो सकता है परिवार की पूरी जिम्मेदारी खुद ही निभाने लगे तथा सास को केवल सुख ही देती एवं दिलाती रहे। सास

सभी परिवार वालों का बहु के प्रति आकर्षण देखती है तो सोचती है कि सब उस ही को क्यों चाहते हैं यह उम्र का फर्क है अब एक युवती की तरफ तो सभी की चाहना वाली नजरें होती ही हैं। पहले सास की तरफ भी होती थीं अब कोई सुन्दर सी नयी नयी अदाओं वाली युवती घर में आ जाएगी तो सब उसकी खुशी उसका आनन्द उससे हंसी मजाक का आनन्द तो सब लेंगे ही और सबको लेना ही चाहिए तभी परिवार में खुशियां होंगी छोटे छोटे व्यंग्य, छोटी छोटी छेड़छाड़ होती हैं तभी तो परिवार का माहौल खुशनुमा होता है। सास कभी न चिढ़े मगर उसमें शामिल हो तथा दूसरों को भी ज्यादा से ज्यादा ध्यान रखना चाहिए कि वे हास्य व्यंग्यों में सावधानी बरतें। बड़ा साफ दिखाई देता है कि उपर लिखित को अगर समझ लिया जाए तथा ध्यान रखा जाए तो धीमे धीमे सबका एकाकार हो जाएगा। सब एक परिवार हो जाऐंगे तथा परिवारों के टुकड़े नहीं हो पाऐंगे।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

जहां अपने से कमजोरों का अपने से गरीबों का (गरीब सिर्फ पैसे का गरीब ही नहीं होता गुणों के गरींब को भी गरीब कहा जाता है) ध्यान रखा जाता है वहां रामराज्य हो जाता है तथा आनन्द आ जाता है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

रामराज्य आह्वान मिशन

काश! हम सब भी श्रीराम जैसे अच्छे स्वामी, श्रीराम जैसे अच्छे कर्मचारी, श्रीराम जैसे अच्छे मैनेजर, श्रीराम जैसी अच्छी प्रजा होते तो इस दुनिया का तो सुखी होना, आनन्द से भरपूर होना तय था।

"आओ रामपन सीखे एवं राम जैसे हो जाऐं"

www.ramrajyaahwahan.com

हमारे दोस्त बने एवं धरती पर रामराज्य लाने का चैलेंज स्वीकार करें

बस अगर आप हमारे दोस्त बनना चाहते हैं तो आपको किन्हीं 3 घरों/व्यापारों में 'रामराज्य' बनाने का लक्ष्य साधना होगा तथा उसमें हम भी आपका साथ देंगे। इसके लिए आपने निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना है।

- आप बस सिर्फ काम बनाऐं, कभी भी कोई काम बिगाड़ें नहीं, न अपना, न किसी और का।
- आप सिर्फ समझाऐं, सिर्फ समझाऐं मगर जबरदस्ती न करें, दूसरे के समझने का इन्तजार करें सब्र रखें।
- आप सिर्फ प्रेमपूर्ण (सौहार्द्रतापूर्ण) वातावरण बनाऐ, कभी क्लेशपूर्ण नहीं, कभी नहीं।
- आप सभी से करुणापूर्ण, दयापूर्ण, सहयोगी भाव रखें।
- दूसरे ने जो किया, जैसे किया क्यों किया उसकी ऐसा करने की मजबूरी समझें, कभी उससे नफरत या गुस्सा ना करें।
- आप अपने काम बनाते समय ध्यान रखें किसी और का काम न बिगड़ जाऐ, काम सभी के बनने ही चाहिऐं, समन्वय बैठाऐं।
- बस ऐसा करें, एवं करते ही रहें, एक दिन सब अच्छा हो जाएगा, अभ्यास करते रहें, करते रहें, अभ्यास से आप इस कला में पारंगत हो जाऐंगे।

अभ्यास से अर्जुन ने ऐसा तीर चलाना सीख लिया था जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता, आप भी यह सब सीख जाऐंगे।

यही तो 'राम' हैं, यही तो रामराज्य है।

जय श्रीराम